नवम्बर २०१६

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

एकता में बल

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ४ अंक: ८
अखंड क्रमांक: ४४
नवम्बर २०१६

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

संपादकीय

बालमित्रों,

"एकता में बल" यह कहावत हमें स्कूल में सिखाई गई है। जहाँ एकता होती है वहाँ शांति होती है, जहाँ एकता होती है वहाँ शक्ति होती है और जहाँ एकता होती है वहाँ सुरक्षा होती है। हाँ, यह हकीकत है। समझना है किस तरह? तो आइए, इस अंक को पढ़ें और एकजुट होकर रहने का महत्व समझें और उसके फायदों का स्वयं ही अनुभव करें।

- डिम्पल मेहता

एकता में बल

अक्रम एक्सप्रेस

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : हमारी पारिवारिक भावना है कि सभी मिलजुलकर रहें लेकिन टकराव होते ही रहते हैं। क्या करें?

दादाश्री : जब ऐसा होता है तब क्या करते हो?

प्रश्नकर्ता : जब ऐसा होता है तब थोड़ी देर खिटपिट होती है, फिर अपने आप ही सब ठीक हो जाता है। फिर दो-तीन दिन के बाद होता है। ऐसा चलता रहता है।

दादाश्री : जिसके घर क्लेश नहीं होते, वहाँ भगवान का निवास होता है। यदि थोड़ा सा भी क्लेश होता है तो भगवान चले जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : पूजा-पाठ रोज़ नियमित होता है।

दादाश्री : पूजा-पाठ का सवाल नहीं है लेकिन घर के लोगों में क्लेश नहीं होना चाहिए। महीने में एक भी दिन टकराव नहीं होना चाहिए। पूजा-पाठ कम होगा तो चलेगा, भगवान कोई ऐसी पूजा के भूखे नहीं है। भगवान तो इतना ही देखते हैं कि "इस घर में एकता है या क्लेश है? यदि क्लेश है तो मैं रहना नहीं चाहता और यदि एकता है तो मैं वहाँ से कभी जाना नहीं चाहता।" आपको किस में फायदा लगता है?

प्रश्नकर्ता : एकता में।

दादाश्री : हं, जब तक स्वार्थ होता है तब तक एकता नहीं रहती। सामनेवाला टेढ़ा हो जाए तो हमें सीधा चलना चाहिए, समाधान लाना चाहिए। झगड़े की स्थिति में हमें समता रखनी चाहिए। वह जुदा होने की कोशिश करे तो हमें कहना चाहिए कि हम एक हैं।

१

सभी के साथ मिलजुलकर रहने से अंदर "कॉमनसेन्स" बढ़ती है।

२

जहाँ एकता है वहाँ शांति होती है और वहीं सुख और आनंद होता है।

यह तो नई ही बात!

२

जहाँ हृदय पूर्वक होता है वहाँ एकता होती है, जहाँ बुद्धि पूर्वक हुआ वहाँ दखल हो जाती है।

४

जहाँ क्लेश होता है वहाँ भगवान नहीं होते।

एकता की चाबी

रवि स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था और घर में रोज़ की तरह खिटपिट भी चल रही थी।

मम्मी चिढ़कर बोल रही थीं, "आज तो मेरी किटी पार्टी है। सभी के लिए सबकुछ मुझे ही तो करना पड़ता है और ऊपर से तुम सभी के हुक्म, ये लाओ और वो लाओ..."

एक तरफ पापा कह रहे थे, "तुम अपना काम नहीं सँभाल पाती तो इसमें दूसरों की गलती मत निकालो। हररोज़ तुम्हारी वजह से मुझे ऑफिस के लिए देर हो जाती है, एक भी चीज़ कभी जगह पर नहीं मिलती।"

दूसरी तरफ दादा जी की आवाज़ें, "सुबह की चाय दोपहर को मिलेगी क्या? ये अखबारवाले भी रोज़ एक ही बात छापते रहते हैं!"

रवि बड़े भाई से पूछने गया कि क्या वे उसे स्कूल छोड़ देंगे या नहीं?

"पापा...! यह इंटरनेट इतना धीमा क्यों चल रहा है? ओहो रवि! मेरे फ्रेन्ड्स के साथ फेसबुक पर चैट चल रही है। तू पड़ोस में रहनेवाली अपनी क्लासमेट खुशी और उसके पापा के साथ चला जा न!" बड़े भाई ने अपने लैपटॉप में से सिर बाहर निकाले बिना ही

सलाह दी।

रवि ने मुँह बिगाड़कर बाहर जाते हुए "जा रहा हूँ, जय श्री कृष्ण" कहा, लेकिन किसी को अपनेआप से फुरसत ही नहीं थी कि उसका जवाब दें।

रवि पड़ोस में खुशी के घर की तरफ जाने के लिए मुड़ा कि तभी खुशी के पापा स्कूटर स्टार्ट करते हुए बोले, "आ बेटा! बैठ जा, हम तेरा ही इंतज़ार कर रहे थे।" रवि पिछली सीट पर खुशी के पीछे बैठ गया और बोला, "अंकल, आपको कैसे पता कि आज भी...ह...हमारे घर की खिटपिट.."

खुशी की मम्मी उसको स्कूल बैग देते हुए बीच में बोलीं, "वापस आकर सब बातें करना, पहले स्कूल जाओ, नहीं तो देर हो जाएगी।" दरवाज़े के पास खड़ी खुशी की दादी ने भी मुस्कराते हुए हाथ हिलाया।

पूरे रास्ते रवि के मन में एक ही विचार चलता रहा, "खुशी के घर जैसी सुख-शांति मेरे घर में क्यों नहीं है?" यही विचार उसे स्कूल में भी परेशान करता रहा और शाम को घर आने के बाद भी उसके मन में वही उदासी...

> "खुशी के घर जैसी सुख-शांति मेरे घर में क्यों नहीं है?" यही विचार उसे स्कूल में भी परेशान करता रहा और शाम को घर आने के बाद भी उसके मन में वही उदासी...

खुशी की दादी ने उसे उत्साह में लाने के लिए पूछा, "आ गया बेटा! कैसा रहा तुम्हारा दिन? चलो, हाथ मुँह धो लो, थोड़ा नाश्ता करके तरो ताज़ा होकर मुझे बताओ कि, आज स्कूल में क्या किया?"

इतने में तो खुशी की मम्मी दोनों के लिए दूध और नाश्ता लेकर आ गई, "रवि, तुम्हारे घर में अभी कोई नहीं है। चाबी यहाँ है, शाम को तुम्हारी मम्मी आकर तुम्हें ले जाएँगी।"

बच्चों ने नाश्ता करके, होमवर्क पूरा किया। फिर खुशी बोली, "चल रवि, हम बाहर खेलते हैं।" रवि ने कुछ जवाब नहीं दिया।

रवि का मन नहीं था इसलिए वह बाहर दादी के साथ झूले पर बैठ गया। खुशी भी दादी के दूसरी तरफ बैठते हुए बोली, "दादी माँ, आज से हमारे स्कूल में ग्रुप प्रोजेक्ट्स होंगे। चार-चार बच्चों के ग्रुप हैं। रवि और मैं एक ही ग्रुप में हैं और दो लड़के नए आए हैं।"

दादी ने रवि की तरफ देखते हुए कहा, "अब वे तुम्हारे साथ हैं तो वे तुम्हारे साथी ही कहे जाएँगे?"

रवि ने जवाब दिया, "वे हमारे फ्रेन्ड नहीं हैं, दूसरे स्कूल से आए हैं उनका तरीका भी हमसे अलग है।"

दादी ने कहा, "अलग-अलग रंग, आकार और सुगंधवाले फूलों को इकट्ठा करके माला बनाएँ तो वह कितनी सुंदर लगती है? इस तरह उनका तरीका तुम सीख लो और अपना तरीका उन्हें बता दो। जो तरीका सभी को ठीक लगे, उस तरह से करो।"

फिर दादी ने कहा, "एक बूढ़े पिता ने अपने चार लड़कों से एक-एक लकड़ी तोड़ने के लिए कहा तो वह सब से तुरंत टूट गई और जब लकड़ियों का गट्ठा तोड़ने के लिए दिया तब कोई नहीं तोड़ पाया। यह बात याद है? एकता में ही शक्ति है। एकता का महत्व समझाने के लिए हज़ारों कहानियाँ बनी हैं और हमारे इतिहास में

ऐसी बहुत सी घटनाएँ हैं जिससे हमें समझ में आता है कि जहाँ एकता नहीं रही वहाँ बड़ी से बड़ी सेना को भी हार का सामना करना पड़ा है। अरे! एकता नहीं होती तो कोई गैर भी लाभ ले जाता है और हमें नुकसान पहुँचा जाता है। घर हो या बाहर यदि एकता नहीं है तो कोई काम ठीक से नहीं होता और यदि मिलजुलकर रहें तो कोई काम मुश्किल नहीं होता!"

रवि दादी का इशारा समझ गया फिर धीरे से बोला, "दादी, एकता और मेल की कहानियाँ तो बहुत सुनी हैं लेकिन एकता रहे किस तरह से?"

खुशी बोली, "दादी, वो दो लड़के तो अपने ढंग से अपना नाम अलग से ही करते रहते हैं हमसे कुछ कहते या बताते भी नहीं है।"

दादी ने हँसकर पूछा, “तुमने उन्हें कुछ बताया? कुछ पूछा?"

रवि ने जवाब दिया, "नहीं।”

तो कल तुम स्वयं बात करना और कहना कि, "हम एक ही ग्रुप में हैं। बोलो, किस तरह काम करना है?" फिर तुम चारों काम बाँट लेना, इस तरह हर एक के हिस्से में एक चौथाई काम ही आएगा और हर एक के काम का लाभ सभी को मिलेगा। दादी ने समाधान दिया, "सामनेवाला टेढ़ा चले तो हमें सीधा चलना चाहिए। वह अलग होने लगे तो हमें कहना चाहिए कि, हम एक हैं। सभी के साथ मिलजुलकर चलो तो एक-दूसरे की कुशलता का लाभ मिलता है।"

“दादी ने समाधान दिया, "सामनेवाला टेढ़ा चले तो हमें सीधा चलना चाहिए। वह अलग होने लगे तो हमें कहना चाहिए कि, हम एक हैं। सभी के साथ मिलजुलकरचलो तो एक-दूसरे की कुशलता का लाभ मिलता है।"”

फिर दादी ने रवि को समझाया, "घर में भी जब तक स्वार्थ होता है तब तक एकता नहीं होती। एक-दूसरे का समाधान करना चाहिए, हल लाना चाहिए। दूसरे की टकराने की तैयारी में हमें समता रखनी चाहिए।"

शाम होते ही रवि घर गया। रात को सोते समय दादी की बातें याद करता रहा। वह कुछ संकल्प करके सो गया।"

दूसरे दिन स्कूल में दादी के कहे अनुसार, रवि और खुशी ने ग्रुप के अन्य बच्चों के साथ प्रेम से बातें की और प्रॉजेक्ट के बारे में चर्चा की। सभी ने एक-दूसरे की मदद की और सब से पहले उनके ग्रुप का प्रॉजेक्ट खत्म हो गया, साथ ही वे पक्के दोस्त भी बन गए।

आज रवि खुशी-खुशी घर आया। आकर होमवर्क पूरा करके उसने पापा की सभी ज़रूरत की चीज़ें ठीक से उनकी जगह पर रख दीं। शाम को बड़े भाई के साथ रुम ठीक करने में मदद की और रात को सोने से पहले दादा जी के पैर दबाए।

दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर तैयार हो गया और फिर मम्मी के काम में मदद करने लगा। दादा जी को चाय-नाश्ता टेबल पर दे आया। यह सब देखकर घर के सब लोग आश्चर्यचकित हो गए। उदास और चुपचाप रहने के बजाय आज रवि उत्साह से सभी की कुछ न कुछ मदद कर रहा था।

दादा जी से रहा नहीं गया और उन्होंने पूछ ही लिया, "क्यों बेटा! तू सभी का काम क्यों कर रहा है? रहने दे, तू तो सब से छोटा है। तू आराम से स्कूल जा, सब अपना-अपना कर लेंगे।"

रवि ने जवाब दिया, "हम सब एक ही हैं तो सभी का काम भी मेरा ही काम हुआ न?" परिवार के सब से छोटे सदस्य की ऐसी सचोट बात सुनकर सभी अवाक् रह गए, अचानक जैसे सभी की आँखें खुल गईं।

उस दिन बड़े भैया बाइक से रवि को स्कूल छोड़ने

गए और कहने लगे, "अब से कॉलेज जाने से पहले तुम्हें और खुशी को रोज़ मैं ही स्कूल छोड़ दिया करूँगा और घर लौटते समय ले आऊँगा। खुशी के पापा से भी कह देना कि वे सीधे ऑफिस जाएँ।"

अगले दिन की सुबह रवि के लिए आश्चर्य से भरी थी। सभी अपना-अपना काम करने के बजाय एक-दूसरे का काम कर रहे थे! पापा और मम्मी मिलकर सुबह का काम कर रहे थे। रवि को उसके बड़े भैया तैयार होने में मदद कर रहे थे। दादा जी भी छोटे-बड़े ऐसे-वैसे काम कर रहे थे। किसी को कोई शिकायत नहीं थी। कोई शोर नहीं था। सभी के चेहरे पर संतोष और आनंद छलक रहा था।

यह देखकर रवि ने "एकता की चाबी" देने के लिए मन ही मन खुशी की दादी माँ का आभार माना।

तो समझे दोस्तों! "एकता में बल" तो सभी को पता है ही लेकिन किस तरह हो उसकी चाबी आपको भी मिल गई न? जहाँ स्वार्थ होता है वहाँ एकता नहीं होती। रवि की तरह आप भी यह चाबी घर में, स्कूल में और जहाँ-जहाँ ज़रूरत हो वहाँ-वहाँ उपयोग में लेकर तो देखना! सुख और शांति का वातावरण हो जाएगा और सभी हल अपने आप ही निकल आएँगे।

एकता की शक्ति

एक बहुत ही छोटा सा गाँव था। करीब दस किसानों के परिवार खुब सुख-शांति से रहते थे। गाँव के लोग अनपढ़ और भोले थे लेकिन प्रेमालु थे।

दिन में सभी मिलजुलकर बारी-बारी से एक-दूसरे के खेत में काम करते थे।

शाम को गाँव के चौगान में सांझे चूल्हे पर साथ में खाना बनाकर खाते थे और एक-दूसरे के साथ सुख-दुःख की बातें करते।

सभी खेतों की फसल एक साथ शहर में बेचकर जो रकम आती उसे वे बराबर बाँट लेते।

एक दिन दो ठग किसी योजना के साथ दो बड़े ट्रक लेकर उस गाँव में आए और फिर स्थिति बदलने लगी।
यार पहलेवाले गाँव में तो सभी को अच्छी तरह ठगा। अब यहाँ भी उसी तरह हाथ साफ कर लेते हैं।
इस तरह एक ठग एक किसान के घर और दूसरा ठग दूसरे किसान के घर जाता है।
अरे वाह! आपके खेत में तो बहुत अच्छी फसल हुई है। इतनी अच्छी फसल तो किसी की भी नहीं है!
हाँ, इस बार ज्यादा अच्छी फसल हुई है। गाँव के सभी लोगों की मेहनत है न!
बहुत भोले हो! आपकी फसल सब से अच्छी और पैसों का बराबर बँटवारा? आपको तो सब से ज्यादा मिलना चाहिए।
हाँ, बात तो सही है। लेकिन गाँव की वर्षों की एकता नहीं तोड़ी जानी चाहिए।
एकता? ज़रा उधर तो देखो।

यह व्यक्ति भी मेरी तरह ही शहर का व्यापारी है। कल ही इस किसान ने शहर जाकर इसके साथ सौदा किया था।
लेकिन रवजी अन्य गाँववालों को छोड़कर अकेले ही...
अरे, मैं तुम्हें उससे दुगने पैसे दूँगा। अपनी फसल मुझे दे दो।
ऐसा कहकर ढेर सारे पैसे देता है। कानजी दुःखी मन से ले लेता है।
उन ठगों ने इसी तरह दो ही दिन में करीब सभी किसानों को बातों में फँसाकर सौदा तय कर लिया। उनके ट्रक भरने लगे।
धीरे-धीरे चौगान पर परिवार कम होने लगे। सभी का अपने-अपने घर में ही खाना बनने लगा। गाँव का सांझा चूल्हा सूना हो गया।
दूसरे दिन से सभी अपने-अपने खेतों में काम करने लगे। कोई खुश नहीं था। भेदभाव होने लगे और झगड़े भी होने लगे।

यह सब देखकर कानजी से रहा नहीं गया। अंततः उसने रवजी से पूछ ही लिया।
भाई रवजी, सालों की एकता तूने क्यों तोड़ दी?
अरे भाई, मैंने तो सुना है कि शुरुआत तो तुमने ही की। फिर सभी गाँववालों ने भी यही किया।
मैंने? भले आदमी, गाँव में से सब से पहले तो तू शहर में जाकर सौदा कर आया, तुझे पैसे लेते हुए मैंने देखा है।
अरे क्या? मैं तो शहर गया ही नहीं। और पैसे? वह आदमी तो अपने आप को मेरी पत्नी के गाँव का बताकर ज़रूरत से ज्यादा अपना धन हमें देकर सँभालकर रखने की विनती कर रहा था इसलिए...
हे भगवान! मैंने क्या किया? स्वार्थ के कारण पूरे गाँव के कलह का कारण बन गया।
तुम वास्तव में उसे पहचानती हो?
देखा तो नहीं, लेकिन उसने पहचान तो सही बताई थी इसलिए...
रवजी ने अपनी पत्नी को टोककर तुरंत पैसे ध्यान से देखे तो उन्हें नकली पाया।

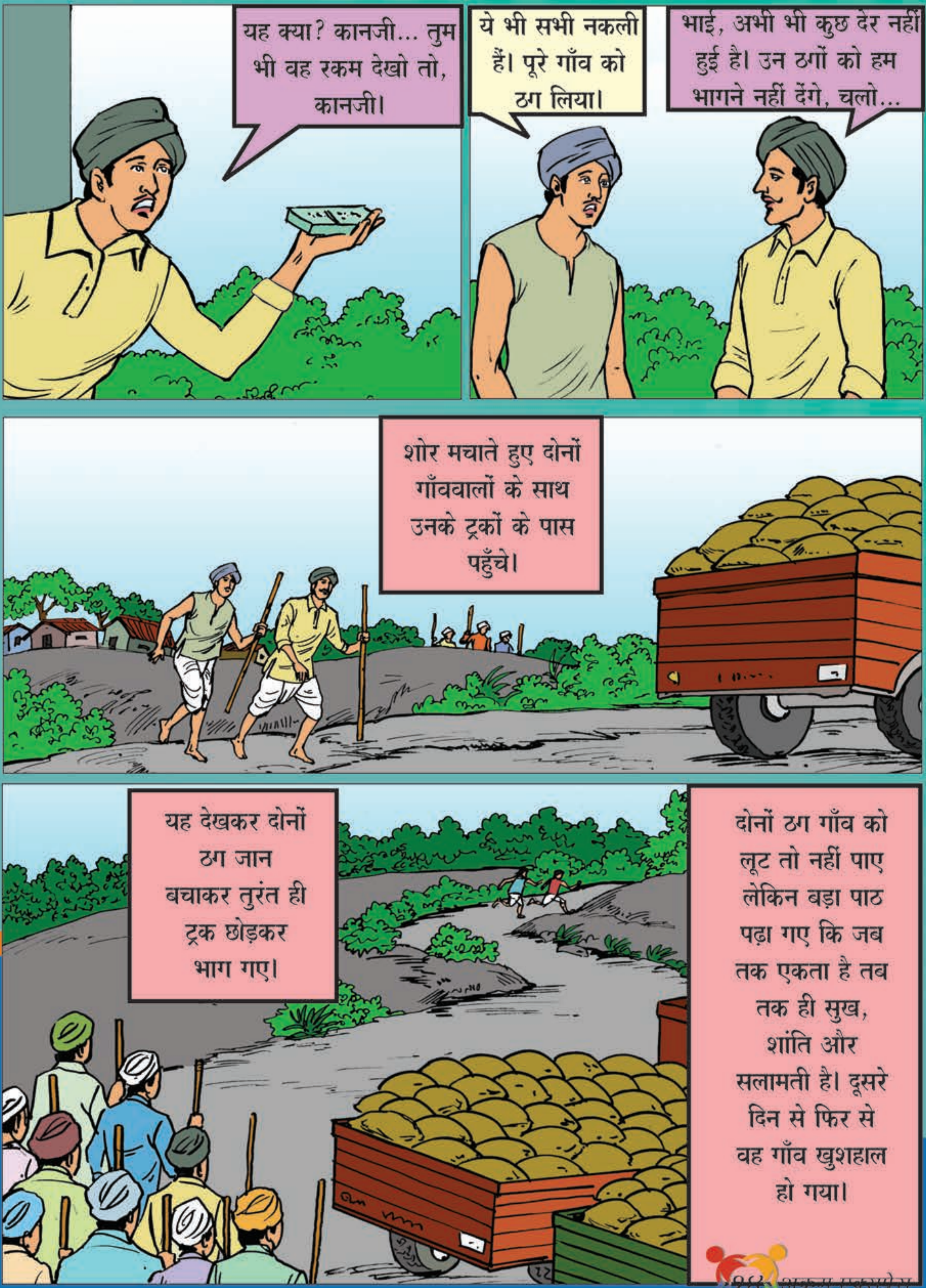
यह क्या? कानजी... तुम भी वह रकम देखो तो, कानजी।
ये भी सभी नकली हैं। पूरे गाँव को ठग लिया।
भाई, अभी भी कुछ देर नहीं हुई है। उन ठगों को हम भागने नहीं देंगे, चलो...
शोर मचाते हुए दोनों गाँववालों के साथ उनके ट्रकों के पास पहुँचे।
यह देखकर दोनों ठग जान बचाकर तुरंत ही ट्रक छोड़कर भाग गए।
दोनों ठग गाँव को लूट तो नहीं पाए लेकिन बड़ा पाठ पढ़ा गए कि जब तक एकता है तब तक ही सुख, शांति और सलामती है। दूसरे दिन से फिर से वह गाँव खुशहाल हो गया।

रियल लाइफ स्टॉरी

पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में पर्थ से ९ कि.मी. दूर स्थित स्टर्लिंग रेल्वे स्टेशन में यात्रियों की सूझबूझ और हिम्मत से एक व्यक्ति की ज़िंदगी बच गई। बात ऐसी थी कि, बुधबार की सुबह उस व्यक्ति का पैर प्लैटफॉर्म और ट्रेन के बीच में फँस गया था। जल्दी से ट्रेन पकड़ते समय यह दुर्घटना हो गई।

घटना को प्रत्यक्ष देखनेवालों के अनुसार, सुबह ८.५० पर ट्रेन पकड़ते समय एक व्यक्ति का संतुलन बिगड़ गया था और वह ट्रेन और प्लैटफॉर्म के बीच फँस गया। वहाँ मौजूद लोगों और रेल्वे स्टाफ ने शीघ्रता की और १०,००० वजन की ट्रेन को टेड़ा करके फँसे हुए व्यक्ति को बचा लिया!

रेल्वे नेटवर्क कंपनी ट्रांसपर्थ के प्रवक्ता डेविड हाईन्स ने बताया कि, "वह दरवाज़े के सामने ही खड़ा था। जैसे ही ट्रेन आई कि वह उसमें घुसने लगा और इतने में पैर गैप में फँस गया। हमने तुरंत ही ड्राइवर को इसकी सूचना दी, कि वह ट्रेन नहीं चलाए।"

डेविड ने बताया कि, "हमारा स्टाफ और कई संवेदनशील यात्रियों ने मिलकर ट्रेन को ऊँचा करके व्यक्ति का पैर बाहर निकाला।"

आश्चर्य की बात तो यह है कि, गैप में जिस व्यक्ति का पैर फँसा था उसे बिल्कुल भी चोट नहीं आई थी। लोग आज भी उन सभी यात्रियों की संवेदनशीलता और एकता की तारीफ करते हैं।

दैनिक कार्यक्रम में सुबह के समय हर एक व्यक्ति भागादौड़ी में होता है। विद्यार्थियों को स्कूल, कॉलेज के लिए देर हो जाती है। नौकरी करनेवालों को समय से ट्रेन पकड़कर नौकरी पर पहुँचने की जल्दी होती है। व्यापारी या व्यवसायी लोगों के पास भी ज्यादा समय नहीं होता। इस समय अधिकतर लोग ऐसे होते हैं कि जिन्हें समय बिगाड़ना यानी धन का नुकसान उठाना, ऐसा लगता है। ऐसे में जो लोग अपना काम छोड़कर किसी अनजाने की मदद करने का सोचे तो वह तो एकता की पराकाष्ठा कहलाएगी। इन सभी अनजान यात्रियों ने स्वार्थ भूलकर एक-साथ मिलकर दुनिया के सामने एक अविश्वसनीय उदाहरण पेश किया।

चलो खेलें...

१.

बॉक्स में रखी हुई चीज़ों को बाजु के चित्र में ढूँढिए।

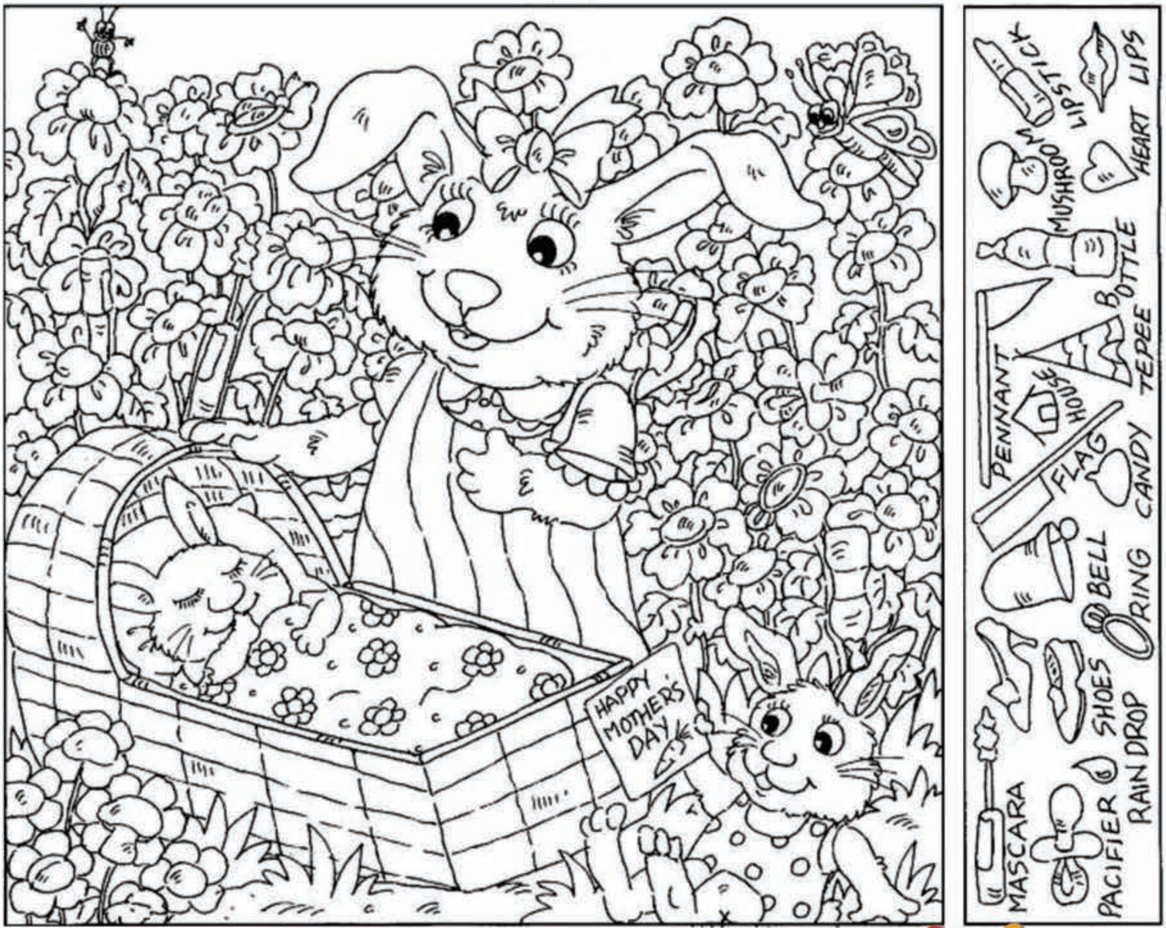

बाजु में दिए गए चित्र को देखकर, नीचे के चौकोर में नंबर लिखकर चित्र पूरा कीजिए।

३.

२. रास्ता ढूँढिए...

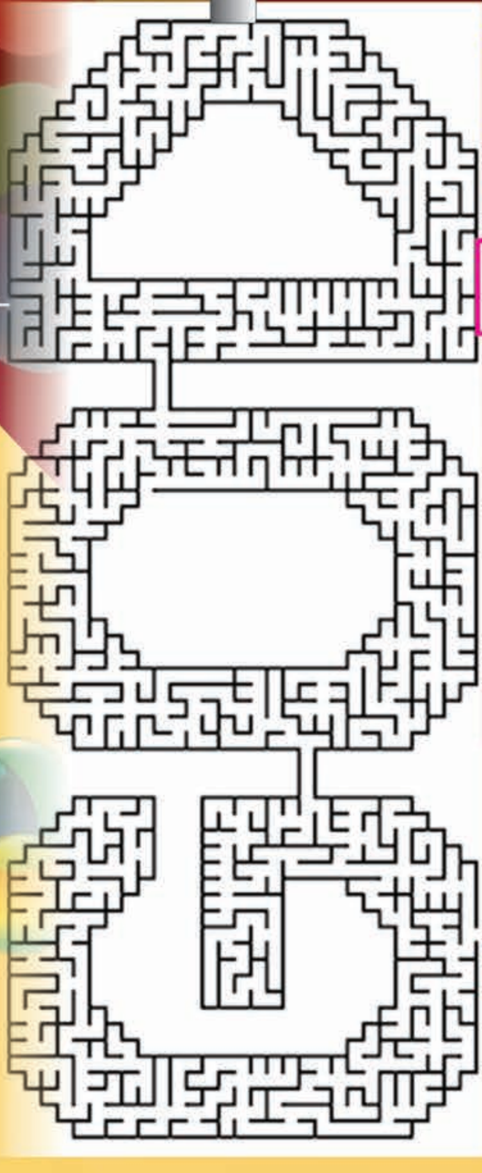

४. नीचे दिए गए चौकोर में खड़ी एवं आड़ी लाइन में १ से ९ तक के अंक में से कोई भी अंक दोबारा न आए इस तरह से सुडोकु पूरा कीजिए।

	4				2		1	9
			3	5	1		8	6
3	1			9	4	7		
	9	4						7
2						8	9	
		9	5	2			4	1
4	2		1	6	9			
1	6		8				7	

मीठी यादें

सन् २००२ की बात है। मुंबई में पर्युषण पर्व था। नीरू माँ के साथ तीन भाई सत्संग की शूटिंग के लिए गए। उनमें से एक भाई नए-नए ही ब्रह्मचारी ग्रुप में शामिल हुए थे, उन्हें नीरू माँ के साथ जाने का चान्स मिल गया।

संयोगवश मुंबई पहुँचते ही उन्हें बुखार चढ़ गया। १०४ डिग्री बुखार था। अब शूटिंग के लिए तीन लोग ही गए थे। उन्हें तीन कैमरे और एक मिक्सर, इतना सब सँभालना था। उसमें से एक के बीमार होने की वजह से मैनेज करने में मुश्किल आ रही थी। फिर भी नीरू माँ ने उस भाई से कहा, "आप आराम करो। आपको आज सत्संग में नहीं आना है।"

नीरू माँ ने शाम को घर आकर देखा तो वे भाई सो रहे थे। नीरू माँ उनके पास गए। प्यार से उनके माथे पर हाथ फेरा। उन्हें अभी भी बुखार था। वे भाई जब जागे तो उन्होंने देखा कि उनका सिर नीरू माँ की गोद में था।

नीरू माँ ने उन्हें प्यार से पूछा, "तुम क्या खाओगे? तुम्हारी जो इच्छा हो, वह बताओ, मैं स्वयं बनाऊँगी।" नीरू माँ ने उनके लिए खिचड़ी बनाई और अपने हाथों से खिलाई।

एक तरफ तो नीरू माँ का सत्संग प्रोग्राम चल रहा था। भाई को बुखार आने की वजह से शूटिंग बिगड़ रही थी लेकिन फिर भी नीरू माँ की स्थिरता इतनी कि उन्हें नुकसान की ज़रा भी फिक्र नहीं थी। बल्कि वह तो सगी माँ की तरह उन भाई की देखभाल कर रही थी और कह रही थी, "तू आराम कर, काम की चिंता मत कर।"

अहो! अहो! वात्सल्यमूर्ति नीरू माँ!

पज़ल के जवाब

१

२

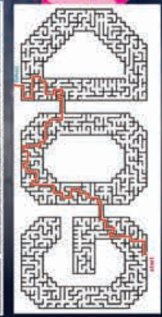

३

४

5	4	6	7	8	2	3	1	9
9	7	2	3	5	1	4	8	6
3	1	8	6	9	4	7	2	5
6	9	4	2	3	8	1	5	7
7	8	3	9	1	5	2	6	4
2	5	1	4	7	6	8	9	3
8	3	9	5	2	7	6	4	1
4	2	7	1	6	9	5	3	8
1	6	5	8	4	3	9	7	2

सीमंधर सिटी में नवरात्री उत्सव के दौरान गरबा लेते और आनंद में दिखते Baby MHT के बच्चें...

Akram Express

November 2016
Year : 4, Issue : 8
Conti. Issue No.: 44

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

आया आया रे... आनंद लाया रे...

दादा का जन्म दिवस

बालमित्रों,

वलसाड में ता. ९ से १५ नवम्बर २०१६ दौरान परम पूज्य दादाश्री का १०९ वां जन्मजयंति महोत्सव मनाया जा रहा है। इसमें आपके लिए विशेष आकर्षण है, आपका मनपसंद चिल्ड्रन पार्क, जिसमें है मल्टीमिडिया शो, पपेट शो और एम्फी थिएटर।

तो आप सभी अपने मम्मी-पापा के साथ इस चिल्ड्रन पार्क को देखने ज़रूर आना। और हाँ, साथ में अपने दोस्तों को भी लाना भूलना नहीं...

स्थान : आई.पी.गांधी हाईस्कूल के सामने,
वांकी नदी के पास,जुजवा गाँव,
धरमपुर रोड़,वलसाड
समय : शाम ५ बजे से रात १० बजे तक
संपर्क : ९९२४३४३२४५

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published